हरिश्चंद्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय वाराणसी

परास्नातक (राजनीति विज्ञान)
(तृतीय सेमेस्टर)

नवम प्रश्न पत्र

(आधुनिक राजनीतिक चिंतन)

डॉ. पंकज कुमार सिंह
राजनीति विज्ञान विभाग
विभागाध्यक्ष & एसोसिएट प्रोफेसर

जॉन स्टूअर्ट मिल
(John Stuart Mill)

(ब्रिटिश राजनीतिक विचारक)

(स्वतंत्रता)

जे. एस. मिल का स्वतंत्रता संबंधी विचार

स्वतंत्रता संबंधी विचारों के कारण **जे. एस. मिल** अंग्रेजी भाषा के सभी राजनीतिक विद्वानों में उच्च स्थान प्राप्त करते हैं। ***"द ऐसे ऑन लिबर्टी"*** *(*1859) नामक पुस्तक में उन्होंने अपनी स्वतंत्रता संबंधी विचारों का वर्णन किया है। राजनीतिक दर्शन को यह ग्रंथ मिल की अनुपम देन मानी जाती है। इसलिए मिल को **" स्वतंत्रता का महानतम पुजारी "** कहा जाता है। **मैक्सी** के शब्दों में, " *स्वतंत्रता के विषय में उसके विचार उच्च कोटि के हैं जिससे मिल की गणना मिल्टन ,स्पिनोजा, वाल्टेयर, रूसो, थॉमस पेन, जेफरसन जैसे अन्य महारथियों में से की जाती है और मिल की रचना* ***ऑन लिबर्टी*** *की तुलना* ***मिल्टन*** *के* ***एरोपेजीटीका*** *से की जाती है।"*

19वीं शताब्दी के यूरोपीय समाज में अनेक राजनीतिक और आर्थिक परिवर्तन आ गए थे जिससे राज्य की शक्तियां एवं कार्य क्षेत्र निरंतर बढ़ते जा रहे थे। **मिल** ने ब्रिटेन की तत्कालीन परिस्थितियों में यह पाया कि सरकार व्यक्ति को क़ानूनों के जंजीरों में जकड़ती चली जा रही है जिससे व्यक्ति के स्वतंत्रता संकुचित होती चली जा रही है। राज्य जनहित के नाम पर विधि निर्माण करके व्यक्ति की स्वतंत्रता पर कई प्रतिबंध लगाने लगा था । मिल को यह डर था कि स्वतंत्रता के लिए सबसे बड़ा खतरा सरकार की ओर से नहीं आता बल्कि ऐसे बहुमत की ओर से आता है जो नए विचारों के प्रति और असहिष्णु होता है, जो विरोधी अल्पसंख्यक विचारों को संदेह की दृष्टि से देखता है और जिसे बहुमत से दबाने की चेष्टा रखता है । राज्य और सरकार के ऐसी ही प्रवृत्ति के विरुद्ध मिल ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए अपने स्वतंत्रता संबंधी प्रतिमान दीया ।

मिल के लिए स्वतंत्रता का अर्थ

मिल के अनुसार सच्ची स्वतंत्र वही है जिससे व्यक्ति के कार्य से दूसरों के सुखों में किसी भी प्रकार की बाधा न पड़े। **मिल** के शब्दों में, *" मानव जाति का इस बात से अधिक हित हो सकता है कि वह प्रत्येक व्यक्ति को अपनी इच्छा के अनुसार अपना जीवन व्यतीत करने की आज्ञा दें, ना कि इस बात से की वह शेष व्यक्तियों की इच्छा अनुसार, उसे अपना जीवन व्यतीत करने के लिए बाध्य करें "*

मिल का स्पष्ट मानना था कि स्वतंत्र वातावरण में ही व्यक्ति अपने व्यक्तित्व का विकास कर सकता है अतः मिल का कथन है कि, " *प्रत्येक व्यक्ति अपने शरीर का संप्रभु है।"*

स्वतंत्रता के प्रकार

मिल ने स्वतंत्रता के निम्न प्रकार बताएं हैं :--

1. विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (Freedom of thought and expression)
2. कार्य की स्वतंत्रता (freedom of work and action)

विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (Freedom of thought and expression)

मिल का विचार है कि प्रत्येक व्यक्ति को विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। समाज, राज्य, बहुमत को उसमें किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। मिल स्वतंत्रता पर इतना उदार है कि उसने सनकी व्यक्ति को भी वैचारिक स्वतंत्रता प्रदान की है। **मिल** के शब्दों में, " *10 सनकी व्यक्तियों में से नौ के विचार व्यर्थ हो सकते हैं परंतु 10 वाँ विचार मानव जाति के लिए लाभदायक सिद्ध हो सकता है ।*'

बौद्धिक और वैचारिक स्वतंत्रता न केवल उस व्यक्ति के लिए हितकर है बल्कि संपूर्ण समाज के लिए भी हितकर है। मिल के अनुसार किसी भी व्यक्ति के द्वारा व्यक्त किए गए विचार समाज के लिए उपयोगी हो सकते हैं। यदि संपूर्ण समाज का एक मत हो और एक व्यक्ति का मत भिन्न हो तो भी उसे अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। मिल के शब्दों में, " *यदि एक व्यक्ति*

के अलावा संपूर्ण मानव जाति के एक मत हो, और केवल एक व्यक्ति का मत उसके विरुद्ध हो, तो भी उस व्यक्ति को बलपूर्वक मौन करने का मानव जाति को उसी प्रकार अधिकार नहीं है जिस प्रकार उस एक व्यक्ति की शक्ति संपन्न होने पर मानव जाति को बलपूर्वक मौन करने का होता।"

वैचारिक स्वतंत्रता व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य की एक आवश्यक शर्त है। मिल ने व्यक्तिगत स्वतंत्रता को राजनीतिक स्वतंत्रता की आधारशिला बताया है। व्यक्तिगत स्वतंत्रता से ही सत्य की खोज संभव है। इस बात को सिद्ध करने के लिए मिल ने सुकरात, ईसा मसीह आदि का उदाहरण दिया है। विचारों पर प्रतिबंध सत्य पर प्रतिबंध है, सत्य के कई पक्ष होते हैं सभी नए विचार सत्य के नए पक्ष को उजागर करते हैं इसलिए महान व्यक्तियों को पूर्ण वैचारिक स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए। विचारों का दमन कर के मानव जाति ने आगामी और वर्तमान व पीढियों का नुकसान ही किया है। अतः मिल ने विचार एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का प्रबल समर्थन किया है।

कार्य की स्वतंत्रता (freedom of work and action)

मिल के अनुसार विचारों को कार्य रूप में परिणत करने के लिए कार्य की स्वतंत्रा आवश्यक है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। **मिल** के शब्दों में, *" कार्य उतने ही स्वतंत्र होनी चाहिए जितने की विचार। अपने विचारों के अनुसार कार्य करने की स्वतंत्रता होनी चाहिए।"*

मिल के अनुसार, "विचारों की स्वतंत्रता अपूर्ण है यदि कार्य की स्वतंत्रता ना हो "कार्य के स्वतंत्रता के अभाव में चिंतन वैसा ही है जैसे व्यक्ति उड़ना चाहता है परंतु पंख नहीं है। मिल ने विचार की स्वतंत्रता की भांति अबाध रूप से कार्य की स्वतंत्रता का अनुमोदन नहीं किया है। मिल के शब्दों में, " *प्रत्येक व्यक्ति को दूसरे व्यक्तियों के लिए कष्ट का कारण नहीं बनना चाहिए।"* मिल ने मनुष्य के सभी कार्यों को निम्न दो भागों में विभाजित किया है :-

1. आत्म विषयक या स्वसंबंधी कार्य (Self - regarding matters)
2. पर सम्बंधी कार्य (other regarding matters)

आत्म विषयक या स्वसंबंधी कार्य (Self - regarding matters)

इसके अंतर्गत वे कार्य आते हैं जिनका संबंध व्यक्ति के व्यक्तिगत जीवन से होता है जैसे भोजन करना, पहनना, सोना, बंद कमरे में शराब पीना, संपत्ति की स्वतंत्रता आदि । मिल ने आत्मा विषयक कार्य में व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता का समर्थन किया है। राज्य को ऐसे किसी भी कार्य में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

पर- सम्बंधी कार्य (other regarding matters)

मिल ने पर- विषयक कार्यों में उन कार्यों को स्थान दिया है जिनका संबंध दूसरे व्यक्तियों या समाज से हैं। जैसे चोरी,हिंसा, अपराध,आदि के संपादन में व्यक्ति को पूर्ण स्वतंत्रता नही मिलनी चाहिए। पूरी स्वतंत्रता पर समाज में अराजकता फैल जाएगी और मानव जीवन खतरे में पड़ जाएगा।

विशेषताएं

1. स्वतंत्रा मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति है।
2. स्वतंत्रता व्यक्ति और समाज दोनों के लिए हितकारी है
3. व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता व अधिकारों की स्वयं रक्षा करनी चाहिए।
4. मिल स्वतंत्रता पर विचार निरंकुशता के विरुद्ध घोषणा पत्र है।
5. व्यक्ति अपने शरीर और मस्तिष्क का स्वामी है।
6. राज्य को व्यक्तिगत स्वतंत्रता में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए ।
7. सुरक्षा और आत्मरक्षा के आधार पर राज्य हस्तक्षेप कर सकता है।

स्वतंत्रता में हस्तक्षेप की परिस्थितियां

1. यदि स्वतंत्रता के दुरुपयोग से दूसरे की स्वतंत्रता खतरे में हो।

2. यदि स्वतंत्रता के दुरुपयोग से समाज और राज्य की सुरक्षा संकट में हो।
3. यदि व्यक्ति के जीवन की सुरक्षा खतरे में हो।
4. यदि व्यक्ति के द्वारा स्वयं का जीवन खतरे में हो।

आलोचना

1. अत्यधिक नकारात्मक स्वतंत्रता
2. खोखली व काल्पनिक स्वतंत्र
3. समानता की उपेक्षा
4. सनकी व्यक्तियों की स्वतंत्रता देना अनुचित
5. कार्य के स्वतंत्रता का अनुचित विभाजन
6. अविकसित देशों के नागरिकों को स्वतंत्रता से वंचित करना
7. अल्पमत को बहुमत से अधिक महत्व देना

बार्कर करके शब्दों में, " *मिल की स्वतंत्रता खोखली स्वतंत्रता है*"

मैक्सी के शब्दों में, " *मिल निरंकुश स्वतंत्रता का प्रतिपादक है*"

निष्कर्ष

जे.एस मिल 19वीं शताब्दी का पहला विचारक था जिसने स्वतंत्रता पर एक स्वतंत्र पुस्तक ऑन लिबर्टी लिखकर यह साबित करने का प्रयास किया की स्वतंत्रता मानव मस्तिष्क और विकास के लिए कितना आवश्यक है । राज्य को मानव के ऊपर कम से कम नियंत्रण करना चाहिए। मिल के स्वतंत्रता संबंधी विचार राजनीतिक साहित्य में अत्यधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है लॉर्ड मार्ले के शब्दों में, " *ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से निकलने वाला प्रत्येक बुद्धिजीवी मिल के उपदेशों से किसी न किसी रूप में प्रभावित रहा है*"